P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कांगड़ा शैली के नल–दमयन्ती चित्रों की विशेषताएं

Features of Kangra Style Nal-Damayanti Paintings

Paper Submission: 03/06/2021, Date of Acceptance: 14/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

सोनाली गुप्ता
शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग,
दयालबाग शिक्षण संस्थान
(डीम्ड विश्वविद्यालय),
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

कला अपने माध्यमों के अनुरूप तत्वों को व्यवस्थित रूप से हमारे सम्मुख प्रस्तुत करती है। मनुष्य मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारणों से अपने चारों ओर के वातावरण को व्यवस्थित करना चाहता है। एक अच्छे संयोजन में विविधता में एकता होती है। विविधता की दृष्टि से संयोजनात्मक तत्वों को व्यवस्थित करके कलाकार एकता स्थापित करता है यानि संयोजन करता है।

काव्य का चित्रकला में रूपांतर ही संयोजन के तत्वों के साथ कांगड़ा शैली की विशेषताएं अद्वितीय गुण है। इन चित्रों को देखकर सहज ही संतुलन व लयात्मकता का प्रतीक कहा जा सकता है। यह वह कला है जो मन को सुखकर प्रतीत होती है और आत्मा को ऊँचा उठाती है। लेखिक ने नल–दमयन्ती कथानक के चित्रों की विशेषताओं का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

Art presents the elements in front of us systematically according to its medium. Man wants to organize the environment around him for psychological and social reasons. In a good combination there is unity in diversity. By arranging the compositional elements with a view to diversity, the artist establishes unity. The transformation of poetry into painting itself with elements of combination is the unique quality of the Kangra style. Seeing these pictures, it can easily be called a symbol of balance and rhythm. It is that art which seems to please the mind and elevates the soul. Author will try to characterize the pictures of the Nal-Damayanti story.

मुख्य शब्द : कांगड़ा, शैली, लघु, चित्रों, सौंदर्यात्मक, नल–दमयन्ती, चित्रकला, विशेषताएं ।

Kangra, Style, Miniature, Paintings, Aesthetic, Tap-Damyanti, Painting, Features.

प्रस्तावना

कला हमारे विचारों का एक दृश्य रूप प्रदान करती है, मानव अपनी अनुभूतियों, भावनाओं तथा इच्छाओं को दूसरों से व्यक्त कर सके और उनकी अनुभूतियों से लाभ उठा सके।

भारतीय साहित्यकारों और कलाकारों ने एक–दूसरे से प्रेरणा कर अपने–अपने रचना विधान को परिपुष्ट किया, अतः जो सौन्दर्य की भारतीय साहित्य में अभिव्यक्ता है, भारतीय कला पर भी उसका व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है।[3]

इसी श्रेणी में कांगड़ा शैली के चित्र भारतीय चित्रकला जगत की अनमोल धरोहर है। नल–दमयन्ती की श्रृंखला के चित्रों में मानवाकृतियाँ भिन्न भिन्न मुद्राओं में चित्रित है।

जयदेव के गीत–गोविन्द, बिहारी सतसई, केशवदास व मतिराम की रचनाओं व भगवत् पुराण से प्रेरित चित्रकारों ने थोड़े ही समय में हजारों की संख्या में चित्र बनाकर एक चमत्कार कर दिखाया।[1] राग–रागिनियों, नायक–नायिका भेद तथा समस्त श्रृंगारिक क्रियायें पहाड़ी कलम की उभरती देह–यष्टि में समाई हुई थी। रेखाओं की कोमलता व एक नये तल–विन्यास ने पहाड़ी कलम को मौलिकता प्रदान की है। लघु चित्रों की सौंदर्यात्मक पद्धति उच्च कोटि की है। यह कृतियां भारतीय कला का गौरव बढ़ाने वाली हैं।

विभिन्न रस, कलात्मक एवं सौंदर्यात्मक गुणों से युक्त इन लघु चित्रों का अध्ययन अवश्य ही कला के नये आयाम स्थापित करेगा जो भविष्य में शोधार्थियों और इस विषय से संबंध रखने वालों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

एक शोधकर्ता को अपना शोध प्रारम्भ करने से पूर्व अपने निर्धारित उद्देश्य का सर्वप्रथम ज्ञान होना चाहिए कि वह किस उद्देश्य से शोध कर रहा है। किसी भी शोध का कार्य एक महत्वपूर्ण तथ्य की खोज करना है चाहे वह प्रयोगात्मक हो या सैद्धांतिक।

पहाड़ी लघु चित्रों में कांगड़ा शैली की विशेषताएं करना व प्रकाश में लाना मेरा उद्देश्य होगा। कांगड़ा शैली में चित्रित नल–दमयन्ती पर आधारित चित्रण सबके समक्ष लाना मेरा उद्देश्य होगा। विभिन्न पहाड़ी शैली की पुस्तकों में से नल–दमयन्ती पर हुए कार्य को अपने शोध द्वारा एक सूत्र में बांधना भी मेरा उद्देश्य होगा। नल–दमयन्ती कृतियों का सौंदर्यात्मक अध्ययन करना ही मेरे शोध का मुख्य उद्देश्य है जो भविष्य में शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

साहित्यावलोकन

मैंने अपने शोध को तर्कपूर्ण तथा महत्वपूर्ण बनाने के लिए कुछ उल्लेखनीय पुस्तकों और साहित्यों का अध्ययन किया जैसे *'बी.एन. गोस्वामी'* द्वारा लिखित 1975 '*Pahari Painting of the Nal Damyanti Theme*, Then - 2015, The Nal Damayanti- A Great Series of Old Indian Romance, Niyogi Books, New Delhi. Sharma, Vijay- Painting in The Kangra Valley, 2020, Niyogi Books.

जिसमें लेखिका ने नल–दमयन्ती के लघु चित्रों को बारीकी से देखा तथा इस विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इसके अतिरिक्त मैंने श्रीहर्ष, 2013, **नैषधीयचरितम् (संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद)**, चौखम्भा कृष्णदास अकेडमी का अध्ययन किया। जिसमें मैंने पहाड़ी कलाकारों तथा उनके रंग बनाने के तरीकों व प्राचीनता को जाना व समझा जिससे मुझे पहाड़ी चित्रकला के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हुई। नल–दमयन्ती की हिन्दी अनुवादित कथा' का अध्ययन कर नल–दमयन्ती की प्रेम कथा को समझा व संबंधित जानकारी प्राप्त किया।

जिस प्रकार प्रत्येक शैली की अपनी अलग विशेषताएं होती है जो उसे दूसरी शैली से भिन्न स्थान प्राप्त कराती है उसी प्रकार कांगड़ा कलम को पहचानने के लिए कांगड़ा कलम की अपनी स्वयं की विशेषताएँ है, जो अपनी परीकाष्ठा के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं जिनका उल्लेख अति आवश्यक है।

कांगड़ा शैली के चित्र लघु आकार के बनाये गये। चित्रों में बारीकी कारीगरी, स्वच्छन्दता और मीना के समान चमकदार रंग, आकृतियों की गोलाई और डोल इस शैली को भारतवर्ष की सर्वोत्कृष्ठ लघु चित्र शैली के स्तर पर पहुंचा देती है।[2]

कागज

इस शैली से लघुचित्र छोटे–छोटे आकार के कागजों पर बनाये गये। ये विशेष प्रकार का कागज सियाल कोटी नाम से जाना जाता था। अन्य कलाकारों की भॉति यहॉ के कलाकरों ने भी इसी कागज का प्रयोग किया। सियालकोटी कागज की अनेक तह चिपका कर कागज को चित्रण योग्य बनाया जाता था जिसको बसली कहा जाता था। इन तैयार कागजों में चित्र बनाने योग्य छोटे–छोटे आकार के टुकड़े निकाल लेते थे। इस पर अच्छे चित्र बनते थे। लघु चित्र बनाने का वास्तव में यही रहस्य है।

हाशिया चित्रण

चित्र पूर्ण होने के उपरान्त इस के किनारे–किनारे पतला या चौड़ा हाशिया बनाया जाता था। जिसमें सरल आलेखन का प्रयोग भी किया गया व कहीं–कहीं बसौहली के समान हाशिए के रूप में लाल पट्टियों का भी प्रयोग किया गया है।

नारी चित्रण

कांगड़ा शैली की अनुपम विशेषता नारी चित्रण है। जिसमें वक्रता व गोलाई तथा सुडौलता दर्शनीय है। चन्द्रमा सी गोल आकृति वाले मुख, धनुषाकार भौहें, मीनाकार भावपूर्ण नेत्र, भेर गोल उरोज, आकर्षक हस्त व पाद मुद्राएँ, लटकते हुये लम्बे केश काँगड़ा शैली की प्रमुख पहचान है।

वस्त्राभूषण

काँगड़ा कलम के चित्रकार, जब भी स्त्री चित्रण के लिए सचेष्ठ रहे हैं। सर्वदा ही उन्होने भारतीय परम्परा के अनुसार उसके आदर्श रूप को ही ग्रहण किया है व स्त्री को लंहगा, कांचुकी पहने तथा पारदर्शी दुपट्टा पहने बनाया गया। प्रारम्भिक काल में पारदर्शी वस्त्रों का व बाद में क्रमशः अपारदर्शी वस्त्रों का अंकन हुआ व कड़े आदि व फर्श में चूमते हुए पैरों में पायजैब भी अंकित है।[3]

पुरूषों के सिर पर कलगी, पगड़ी, शरीर पर जामा तथा नीचे चूड़ीदार पायजामा है, कन्धे पर लटकता पटका, कमर में पैंची बनायी गयी है। कहीं–कहीं पर ऊपर का शरीर वस्त्रहीन व मालाओं से सुशोभित है।

पशुपक्षी चित्रण

काँगड़ा शैली में पशु–पक्षियों का अंकन मानव भावना के अनुकूल व प्रतीक रूप में अंकित किया गया है। वर्षा में बगुला, विरह में सारस, मोर, विरहणी, रागिनी के चित्र में बतखों के जोड़े व कृष्ण के साथ गायों का अंकन है। शारीरिक रचना– जैसे पैरों आदि के अंकन में अपनी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है। पशुओं में सजीवता और गति सर्वत्र दिखाई पड़ती है।

वनस्पति तथा प्रकृति

कांगड़ा के चित्रों में प्रकृति के प्रति एक गहन प्रेम प्रदर्शित किया गया है। जिसमें व्यास नदी के क्षेत्र की भव्य वनस्पति और प्राकृतिक छटा विद्यमान है। प्रायः पीपल, वट, बांस, आम, जामुन, मंजनू, केला, कचनार, अमलताश, शीशम ढाक आदि वृक्षों को बनाया गया। प्रेमी व प्रेमीकाओं की संयोगावस्था में वृक्ष से लिपटीं पुष्पित लतिकाओं को संयोग के प्रतीक के स्वरूप में अंकित किया गया।

परिप्रेक्ष्य

चित्रकार ने आलेखन आदि को कल्पना के अनुसार बनाया है फिर भी उसने इनके द्वारा परिप्रेक्ष्य के प्रयोग में विकृति न होने दी। परिप्रेक्ष्य को उसके कोमलरेखा व चमकदार रंगों द्वारा बनाया है।

रंग संयोजन

काँगड़ा के कलाकारों ने अमिश्रित रंग जैसे लाल, पीले, नीले रंगों का प्रयोग किया। जो आज भी सूर्य के समान चमकदार हैं।[4] अमिश्रित तथा हल्के रंगों में चित्रकार ने गुलाबी, बैंगनी, हरा तथा हल्के नीले रंगों का प्रयोग किया। हल्के रंगों के अधिक प्रयोग से चित्रों में आज और कोमलता की अत्यधिक वृद्धि हुई। यहाँ के चित्रों में रंगों में रमणीयता अद्वितीय रूप से प्रकट हुयी है। सफेद, हरा, पीला रंग मानव आकृतियों को छोड़ कर अन्य सभी आकृतियों में भरा गया है। मानवाकृति प्रायः गर्म व प्रखर रंगों में बनी है। इस प्रकार इन चित्रों में जो रंग भरे गये वह एक साथ जो जहॉ कोमल है वहॉ चमकीले भी हैं। इसलिए इस शैली की रंग योजना को इन्द्रधनुषीय वर्ण योजना कहा गया है।

रेखांकन

भूरे सियालकोटी कागज पर हल्के लाल रंग से तूलिका के द्वारा पहले रेखांकन किया है। फिर सफेद रंग से सपाट व पारदर्शी रंग से पोत दिया जाता था तदुपरान्त कागज को घेट कर चिकना करने के पश्चात् चित्र की सीमा रेखा को भूरे या काले रंग से उभार दिया जाता था फिर पृष्ठभूमि और आकृतियों में रंग भर रेखाओं को उभारा जाता था। इसमें मुख्यतः रेखा की कोमलता, रंगों की चमक तथा अलंकारिक विवरणों की सूक्ष्मत्य है। अजन्ता के समान काँगड़ा की कला भी समान रेखा की कला है। रेखा में कोमलता हेतु गिलहारी के बालों द्वारा निर्मित तूलिका का प्रयोग किया गया। इस शैली में रेखा अपनी उत्कृष्ट सीमा पर पहुँची जान पड़ती है। चित्रकारों ने सधे हुये हाथों से इस शैली की प्रभावमयी रेखाओं का निमार्ण किया। इसके कारण रंगों का स्थान गौण हो गया।

छन्द

काँगड़ा शैली के चित्रकार का प्रधान विषय प्रेम है व प्रेम के विभिन्न भावों का इस शैली में छन्दमय, काव्यमय, चित्रात्मक रूप से अंकन किया गया है। वाद्य यन्त्रों का प्रयोग –कृष्ण की बांसुरी के अतिरिक्त, तम्बूरे ढोलक, मृदंग, मंजीरा, वीणा सितार आदि का चित्रण हुआ है।

मानव आत्मा

काँगड़ा की श्रंगारिक चित्रों में भावना की तीवृता है।[5] हिमालय की तराई के अचानक जंगलों में से जब पुरूष सकुशल आ जाता था, तो स्त्रियों को बहुत प्रसन्नता होती थी और मृत्यु की आशंका के कारण उनका मिलन और भी उन्माद हो जाता था।[6] यही उन्माद आत्मा और परमात्मा के प्रेम का प्रतीक बन गया।

निष्कर्ष

निष्कर्ष में भारतीय लघुचित्रों मे नल–दमयन्ती चित्रों के विषयगत महत्व को स्पष्ट किया गया है। वर्णो तथा आकारों द्वारा इन्होंने अपने चित्रों में बहुत सुन्दर अन्तराल विभाजन किया है। लघुचित्रों में कलाकार ने संयोजन की बारीकियों को गहराई से सीखा और चित्रों में अन्तराल को विभाजित किया। चित्रों में गति, लय रंगों का मिश्रण सम्मिश्रण, विरोध और रेखाओं में दृढ़ता है, जिससे हमें कलाकार का दीर्घ अनुभवी निरूपण कौशल झलकता है।

लेखिका को आशा है कि इस लघु प्रयास से विद्वानों, कला अध्येताओ एवं जिज्ञासुओं को इन कांगड़ा शैली मे चित्रित नल–दमयन्ती चित्रों के वैभव का न सिर्फ पूर्ण परिचय प्राप्त होगा अपितु इन चित्रों के महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पक्षों से भी वह अवगत हो सकेंगे। यही इस शोध प्रबन्ध का उद्देश्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *किशोरी लाल वैद्य, पहाड़ी चित्रकला, पृ0सं0– 20 ।*
2. *गैरोला वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, पृ0सं0 –61*
3. *द्विवेदी, प्रेमशंकर, भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, पृ0सं0 – 120*
4. *डॉ नगेन्द्र देव और उनकी कविता, पृ0सं0 –212*
5. *अग्रवाल, राका, कांगड़ा में श्रंगार रसानुभूति के उपाधार, लॉयल बुक डिपो, मेरठ, पृ0सं0 –72*
6. *अग्रवाल, राका, कांगड़ा में श्रंगार रसानुभूति के उपाधार, लॉयल बुक डिपो, मेरठ, पृ0सं0 –72*